ध्वस्त हो चुकी हैं। चौथी और पाँचवी गुफाओं के बरामदे में बने चित्र अत्यधिक आकर्षण हैं। चित्रों के विषय मनुष्य, गायन, नृत्य, हाथी व घोड़ों पर सवार व्यक्ति, बुद्ध उपदेश करते हुए तथा स्त्रियाँ आदि हैं। चित्रों में पीला, नीला, लाल और विरोधी रंगों का प्रयोग किया गया है। प्रकृति और पशु चित्रण आकर्षक है।

(3) सिंगीरिया की गुफाएँ - श्रीलंका में सिंगारिया का भित्ति चित्रण दो विशाल गुफाओं में है जिनमें कुल 22 चित्र हैं। चित्रों का विषय केवल नारियाँ हैं। नारी - चित्रण ~~मन~~ मनमोहक और भावपूर्ण हैं, जैसे - देव बालाएं वाद्य यंत्र लिए पूजा करने निकली हैं। चित्रों का रंग विधान उत्तम है।

(च) मध्यकालीन कला (700 ई० से 1500 ई० तक)
पूर्व मध्यकाल (700 ई० से 1000 ई० तक) की कलाओं में बादामी गुफा,

सित्तनवासन गुफा, एलोरा और एलिफेन्टा गुफाओं की चित्रकारी और मूर्तिकला प्रसिद्ध हैं —

(1) सित्तनवासन गुफा — यह गुफा मद्रास (चेन्नई) के निकट पुदुकोटा नामक स्थान पर हैं। यहाँ के चित्र बौद्ध शैली के हैं किन्तु ~~के मूर्ति~~ ऐश्वर्य प्रधान हैं।

(2) बादामी गुफाएँ — ये गुफाएँ मुम्बई के निकट ~~अइहोल~~ आइहोल नामक स्थान पर हैं, जो 6 से 8 वीं शताब्दी के मध्य चालुक्य वंश के राजाओं ने निर्मित कराई। यह संख्या में 4 हैं और इनके विषय सांसारिक हैं।

(3) एलोरा की गुफाएँ — अंजता की गुफाओं से 50 मील दूर पहाड़ी काटकर मंदिरों के आकार में ये गुफाएँ बनाई गई हैं। इनकी संख्या 34 हैं। इनमें 12 गुफा मन्दिर बौद्ध मंदिर हैं, 17 गुफा

मंदिर ब्राह्मण मंदिर हैं जिनमें हिंदू देवी - देवताओं की मूर्तियाँ स्थित हैं - 5 गुफा मंदिर जैन मंदिर हैं जिनमें अब मंदिर के बाहर बरामदे के चित्र ही शेष रह गए हैं, अंदर के चित्र समय के साथ नष्ट हो गए हैं। इनके चित्र प्राय: धार्मिक और पौराणिक हैं। इनकी चित्रकला अजंता की कला के समान परिपक्व नहीं है, किंतु ये मूर्तिकला के बेजोड़ उदाहरण हैं। ये स्थापत्य कला में अद्वितीय हैं।

(4) एलिफेन्टा की गुफाएँ — ये गुफाएँ बंबई के निकट हैं, जहाँ जलबोट से जाते हैं। गुफाओं के सामने विशाल हाथी की मूर्ति है, इसी कारण पुर्तगालियों ने इसका नाम एलिफेन्टा रखा। यह संख्या में 5 हैं। इनमें चित्रकला कहीं नहीं है, सुंदर मूर्तियाँ हैं जिनमें शिव के विविध रूपों को कुशलता से दर्शाया गया है।